



**SHRI DIGAMBER JAIN ACHARYA  
SANSKRIT MAHAVIDYALAYA  
JAIPUR**

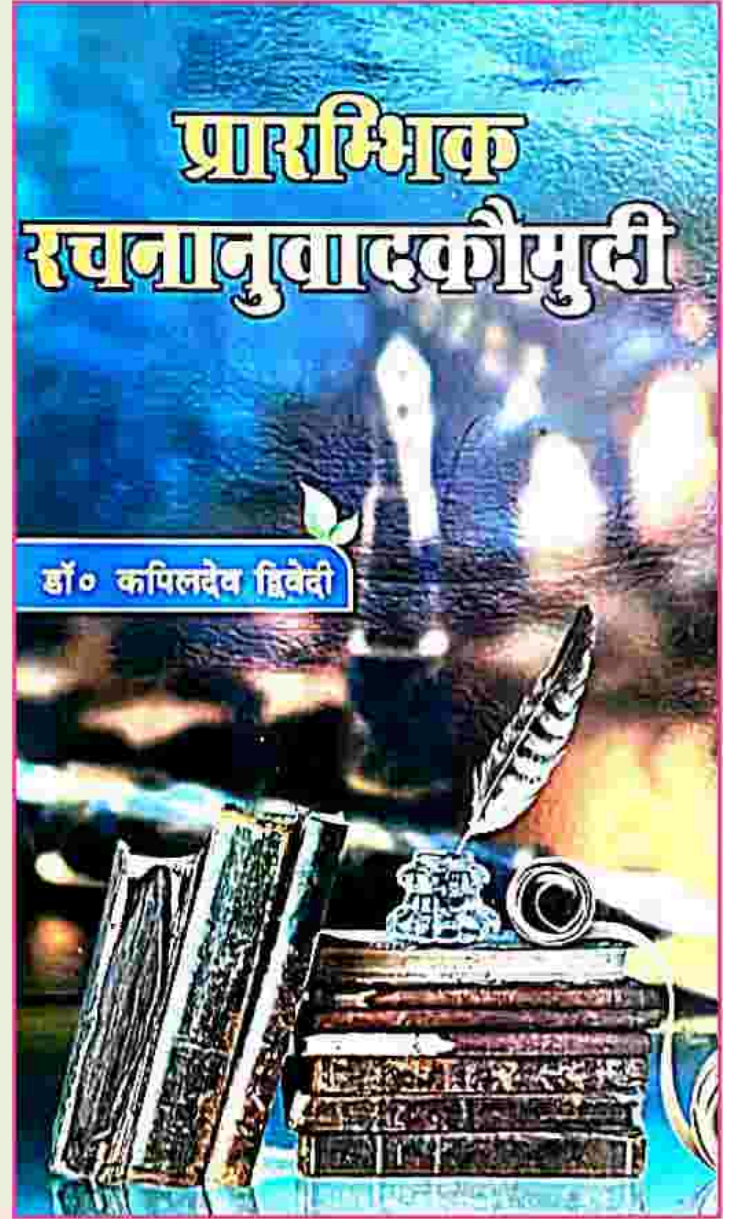
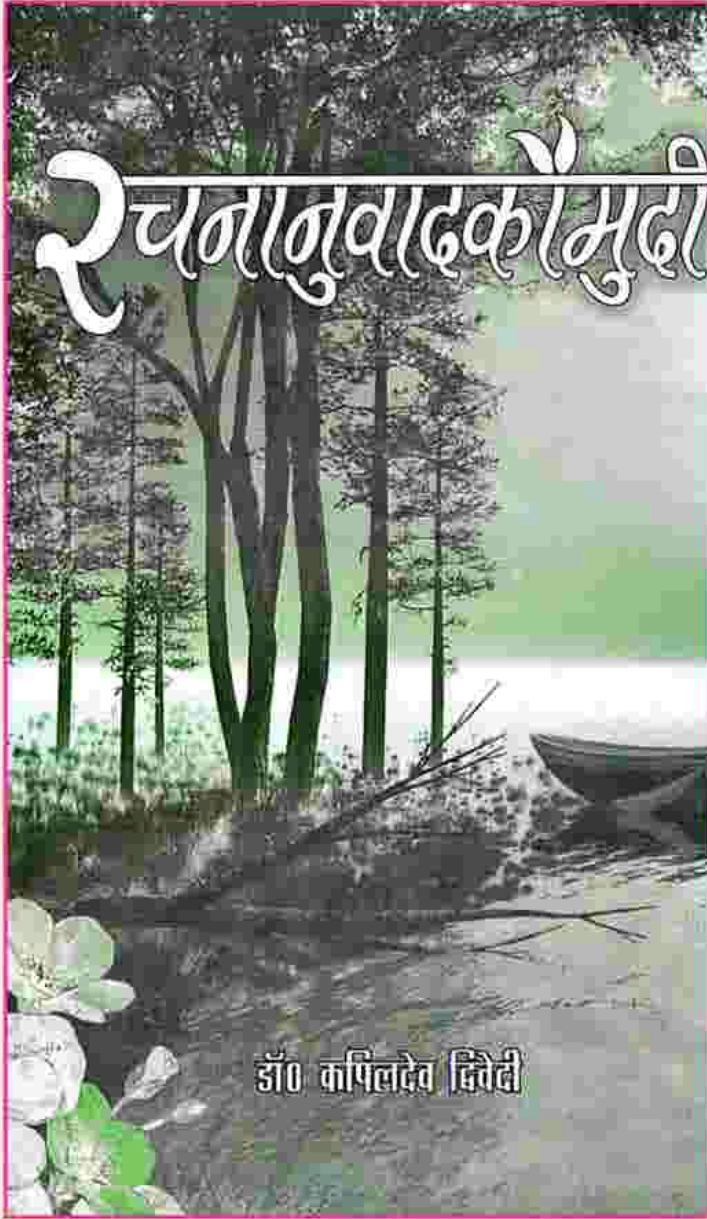


[www.jainsanskritcollege.com](http://www.jainsanskritcollege.com)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय  
कैन. ए. १०००, वि. ए. सी. गेट, कदपुर-29 (राज.)

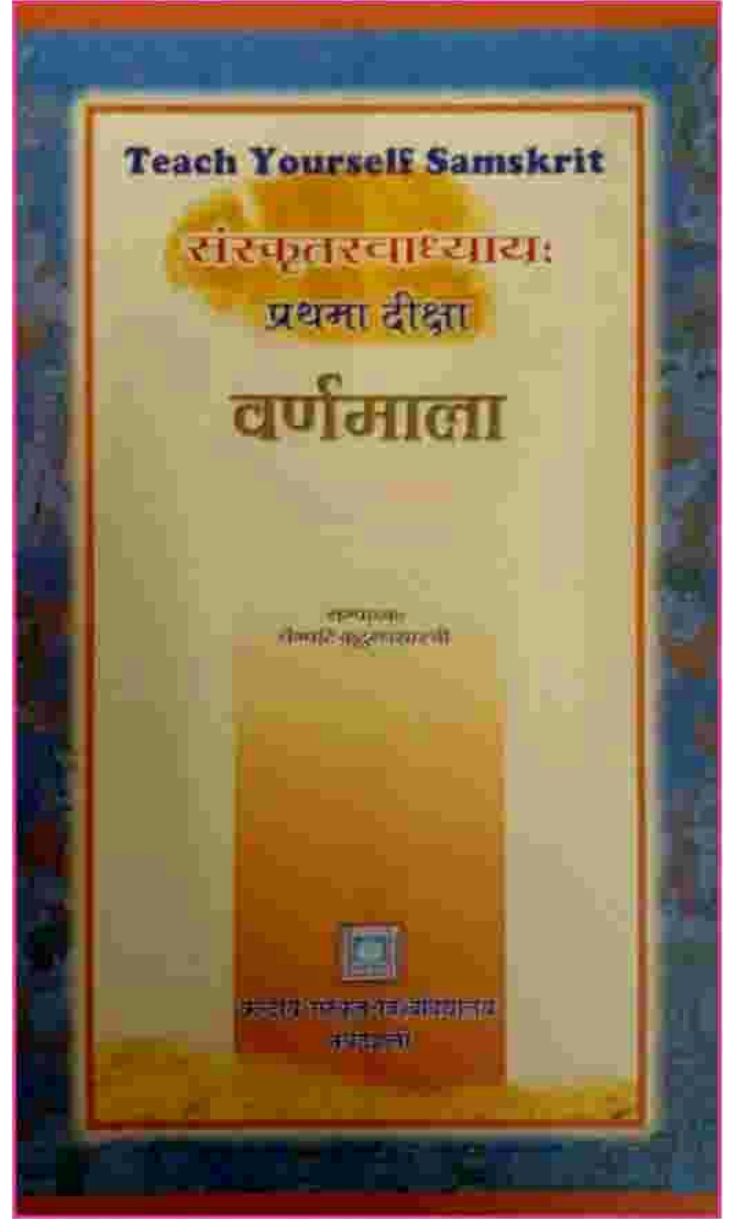
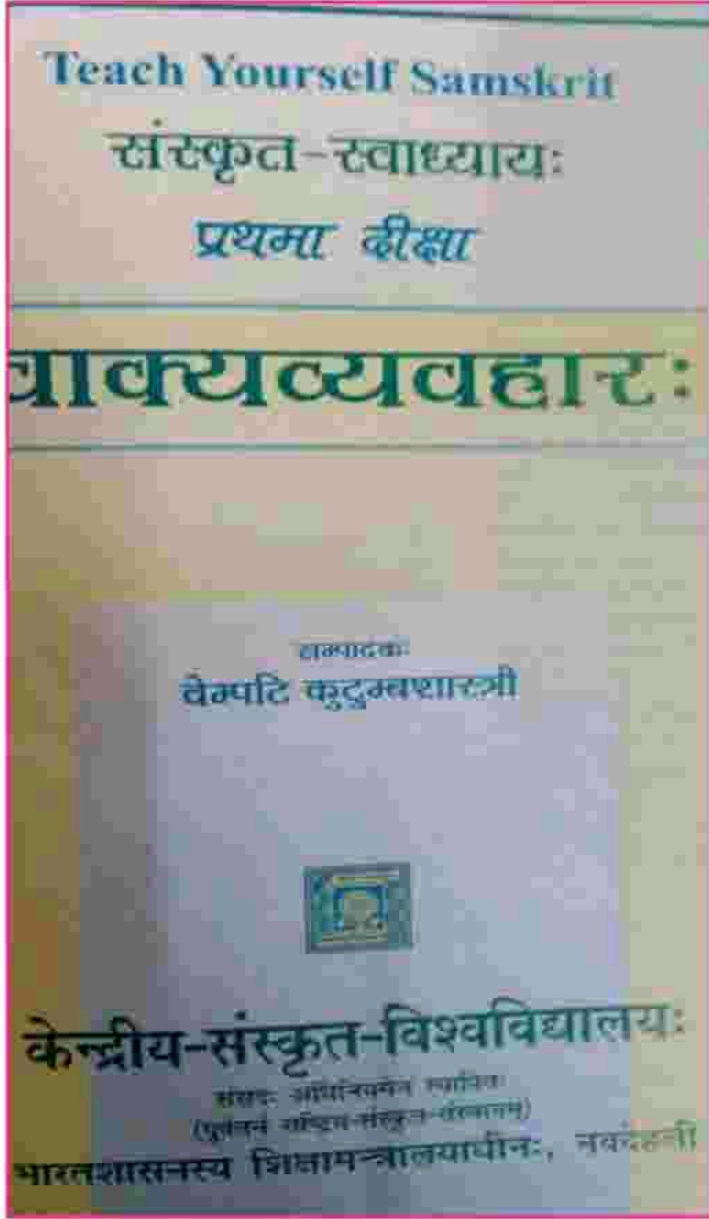
# सम्भाषणस्य पुस्तकानि



श्री लक्ष्मी  
प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय  
जैन नर्सरी रोड, सौभाग्यनगर, जयपुर-29 (राज.)

# सम्भाषणस्य पुस्तकानि



श्री दिगम्बर  
प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय  
जैन नरेश्वरी रोड, साँगाँनेर, जयपुर-29 (राज.)

# सम्भाषणस्य पुस्तकानि

संस्था - वाक्यशास्त्राचार्यः  
 पता - कुलसचिवः  
 केन्द्रीय-संस्कृत-विश्वविद्यालयः  
 56-57, इन्स्टीट्यूटग्रामम्, एरिषा  
 जयपुरी, नवदेहली - 110 058  
 दूरभाषः | 28524943, 28521944, 28524995, 28520877  
 फ़ैक्स नम्बरः 28524532, 28524187, 2850976  
 E-mail: registrar.sanskrit@gmail.com  
 registrar@yashob.com  
 website: www.sanskrit.nic.in

प्रथमसंस्करणम् - जनवरी, २००२ - १,०००	प्रतयः
प्रथमपुनर्मुद्रणम् - अगस्त, २००२ - ४,०००	प्रतयः
द्वितीयपुनर्मुद्रणम् - अगस्त, २००३ - १,०००	प्रतयः
तृतीयपुनर्मुद्रणम् - अगस्त, २००३ - ३०,०००	प्रतयः
चतुर्थपुनर्मुद्रणम् - दिसम्बर, २००३ - २०,०००	प्रतयः
पाञ्चमपुनर्मुद्रणम् - मार्च, २००४ - ५०,०००	प्रतयः
षष्ठपुनर्मुद्रणम् - दिसम्बर, २००४ - २०,०००	प्रतयः
सप्तमपुनर्मुद्रणम् - जून्, २००९ - ५,०००	प्रतयः
अष्टमपुनर्मुद्रणम् - सितम्बर, २०१० - ५,०००	प्रतयः
नवमपुनर्मुद्रणम् - दिसम्बर, २०११ - ३,०००	प्रतयः
दशमपुनर्मुद्रणम् - सितम्बर, २०१२ - १०,०००	प्रतयः
एकादशपुनर्मुद्रणम् - जून, २०१३ - १५,०००	प्रतयः
द्वादशपुनर्मुद्रणम् - जनवरी, २०१६ - २५,०००	प्रतयः
त्रयोदशपुनर्मुद्रणम् - मार्च, २०१८ - १०,०००	प्रतयः
चतुर्दशपुनर्मुद्रणम् - अक्टूबर, २०१९ - १०,०००	प्रतयः
पञ्चदशपुनर्मुद्रणम् - नवम्बर, २०२१ - ५०००	प्रतयः

☐ केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली  
 ISBN - 81-86111-00-X  
 मूल्यम् - 500/- रूप्यकाणि (गुच्छम्य)  
 मुद्रकः  
 प्रिन्टिङ्ग इन्टरनेशनल  
 ए-६/सी, सिलामिल इन्स्टीट्यूट एरिषा  
 नवदेहली - 110 0095  
 E-mail: printer@international@gmail.com

## संस्कृतखाध्यायः

प्रथमः खंडः

मार्गदर्शकसमितिः

प्रो० श्रीधर वसिष्ठः  
 श्री चम्. कुलशास्त्री  
 बीमती शशिप्रभा गोयल  
 डा० विश्वासः

प्रो० कं.वि. रामकृष्णनाथ  
 डा० वीद किरण सलुजा  
 श्री जनार्दन हेगडे  
 डा० ग. देवनाथन्

सहसम्पादकाः

ललित कुमार त्रिपाठी  
 आई.एन. रमेशः  
 मुकेश कुमार सेनापतिः  
 दनमाली विश्वालः

सहयोगिनः

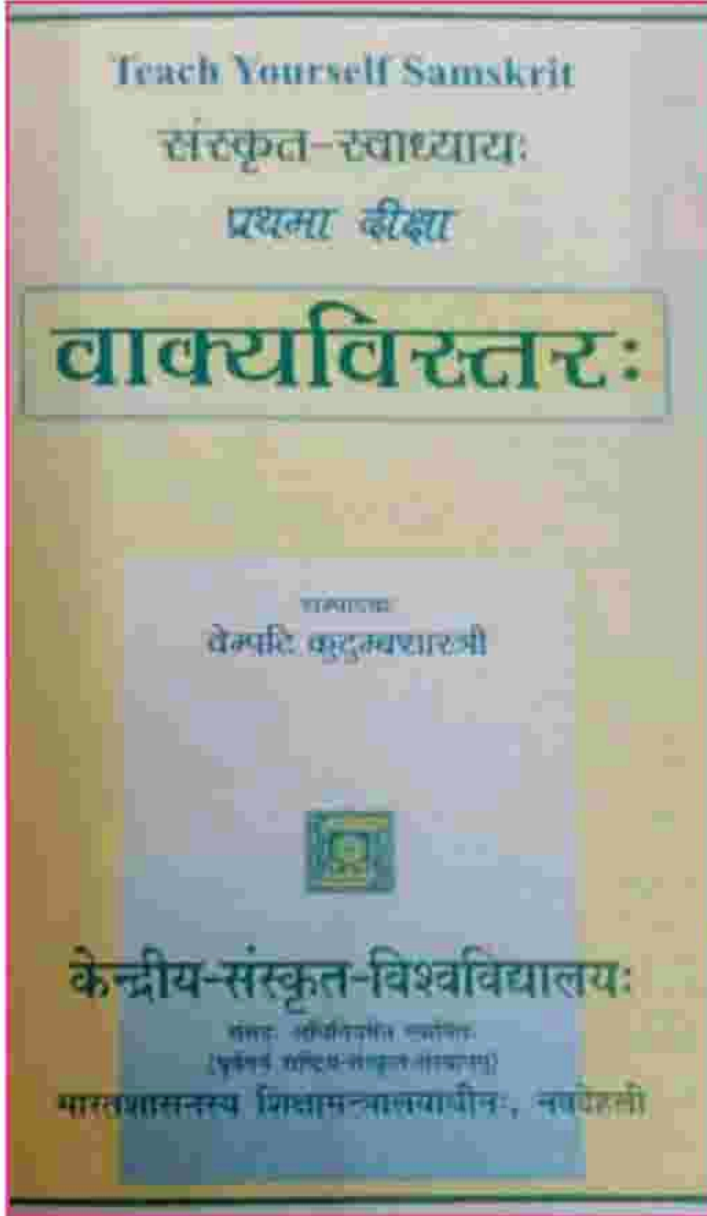
भारतः - कन्तोस गजूमदार  
 सस्ताकारी - ब्रह्म बनेटिया  
 विजय बनेटिया

सहचित्रकारः - भास्कर सिंह  
 अभिलेखीकरणः - जवाहर लाल

श्री गुरु  
 प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय  
 जैन नरेश्वरी रोड, सौभाग्यनगर, जयपुर-29 (राज.)

# सम्भाषणस्य पुस्तकानि



**परिचय**

संस्कृत भाषा एवं उसमें विहित ज्ञान अथवा भाषा की विद्या वीर्य का सिद्धि है। संस्कृत विहित मरिचक पेटी को पार करने के साथ-साथ भाषा में बौद्धिक विद्यार्थी को प्रकाश का एक सदाकेत भावना रहि है। जितना-सोच में ज्ञानों के योग्य-योग कर्म के बाद ज्ञान में संस्कृत भाषा की जगती की खुद परन्तु अभी भी भारतीय समाज की प्रत्यक्ष में न आकर्षण एवं अनुग्रह है। भारतीय समाज संस्कृत को राष्ट्र की प्राचीन भाषा एवं मूल है। अतः इसके फल-प्रचार को राष्ट्रहित में अनिवार्य समझा जाता है।

‘छात्रिय संस्कृत संस्थान’ संस्कृत विद्या एवं संस्कृत भाषा के विद्यार्थियों प्र में भाषा की अध्ययन एवं शिक्षण-संस्थाओं में अग्रगण्य है। संस्कृत विद्या के प्र प्रवर्धन संघान के वरुणी भाषाओं को एक जुड़ है। जनसामान्य संस्कृतभाषा को इस संस्था में उत्कृष्ट शान्ती की अपेक्षा एवं से करना का यह है किमकी। एक-वचनाकारिणी तथा दूरगामीनी योजना ‘संस्कृत-स्वाध्याय’ की सहायता की प्र प्रमुख उद्देश्य संस्कृत भाषा के मूल-अध्ययन एवं अधिक समर्थों को तैयार तथा प्र-भाषाओं से प्रवर्धन करता है। इस सामग्री का मासिक से दूर-दूर-जगत् एवं जगत् के साथ-साथ जतीयकारिक-संस्कृत शिक्षण एवं अन्य संस्थाओं की पाठ्य-सामग्री के रूप में भी उपयोग किया जा सकता है। ‘संस्कृत-स्वाध्याय’ के नाम में प्र-भाषाओं को बीच भागों में विभक्त किया गया है जिसका सक्रिय परिचय इस-प्र

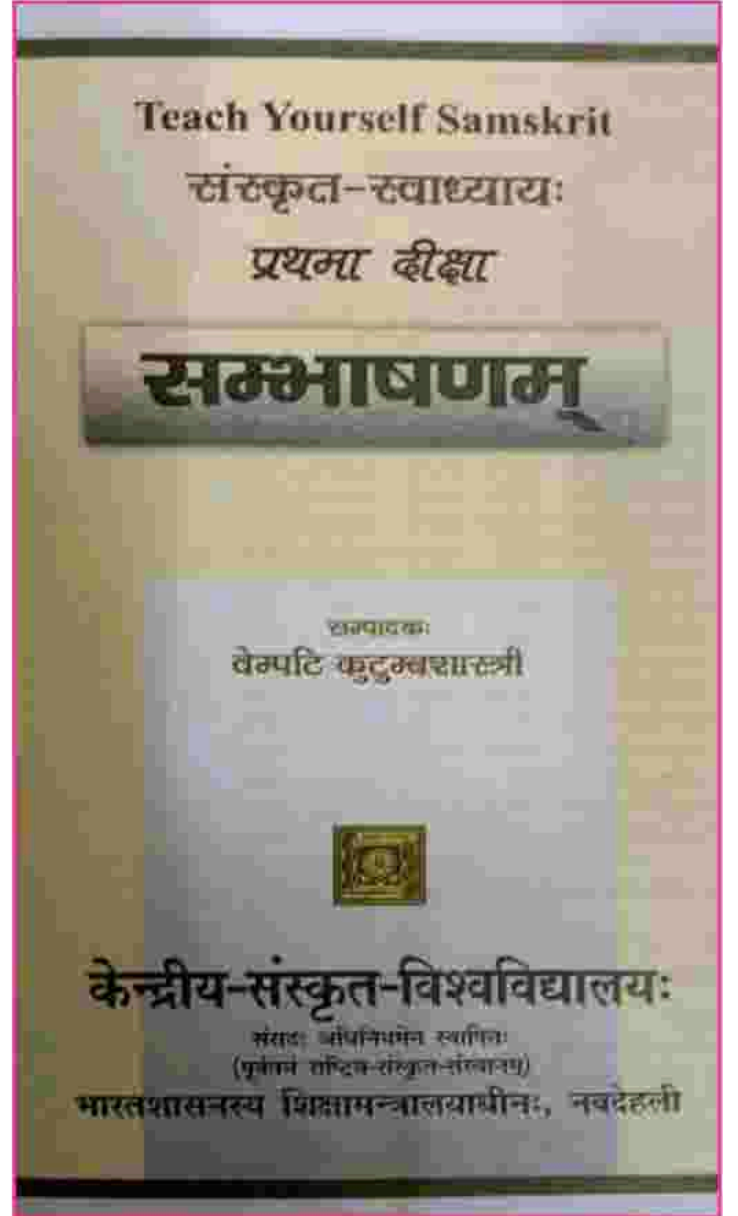
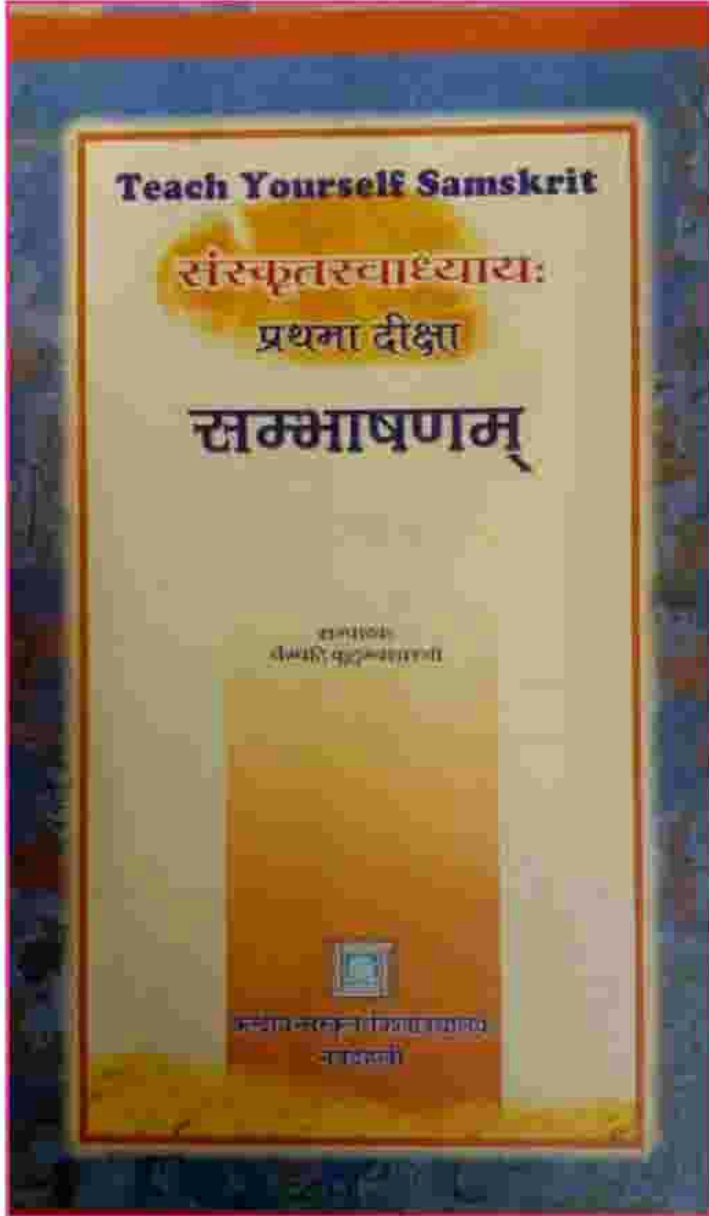
**पञ्चस्तरीय पाठ्यक्रम (सहित परिचय)**

पाठ्यक्रम	उद्देश्य
1. विद्या (कक्षा 8-10) अभ्यासकारिणी	► संस्कृत ज्ञान के विहित-संस्थाओं में संस्कृत-विद्यार्थियों को अधिक जगत् का शिक्षण कराते हैं।
2. विद्या (कक्षा 11-12) अभ्यासकारिणी	► संस्कृत ज्ञान के अधिक-विहित-संस्थाओं में संस्कृत-विद्यार्थियों को अधिक जगत् का शिक्षण कराते हैं।
3. विद्या (कक्षा 13-14) अभ्यासकारिणी	► संस्कृत ज्ञान के अधिक-विहित-संस्थाओं में संस्कृत-विद्यार्थियों को अधिक जगत् का शिक्षण कराते हैं।
4. विद्या (कक्षा 15-16) अभ्यासकारिणी	► संस्कृत ज्ञान के अधिक-विहित-संस्थाओं में संस्कृत-विद्यार्थियों को अधिक जगत् का शिक्षण कराते हैं।
5. विद्या (कक्षा 17-18) अभ्यासकारिणी	► संस्कृत ज्ञान के अधिक-विहित-संस्थाओं में संस्कृत-विद्यार्थियों को अधिक जगत् का शिक्षण कराते हैं।

श्री दिगम्बर जैन  
प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय  
जैन नरेश्वरी रोड, साँभानेर, जयपुर-29 (राज.)

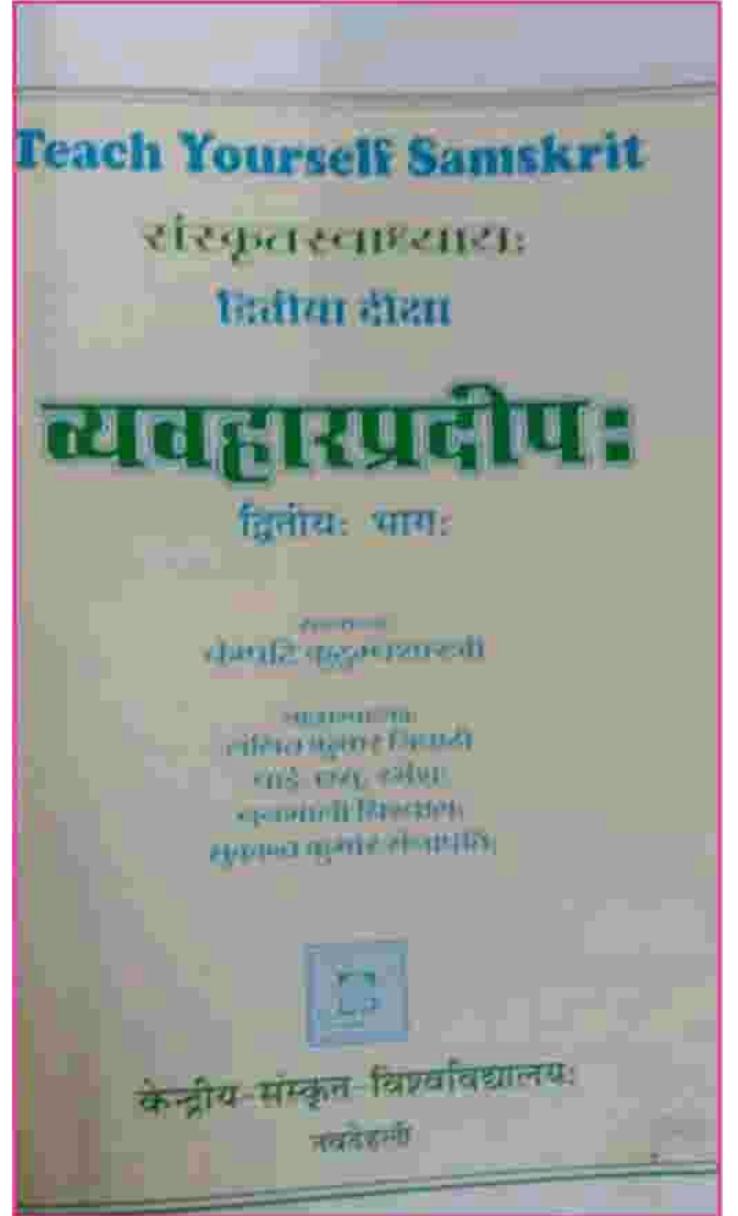
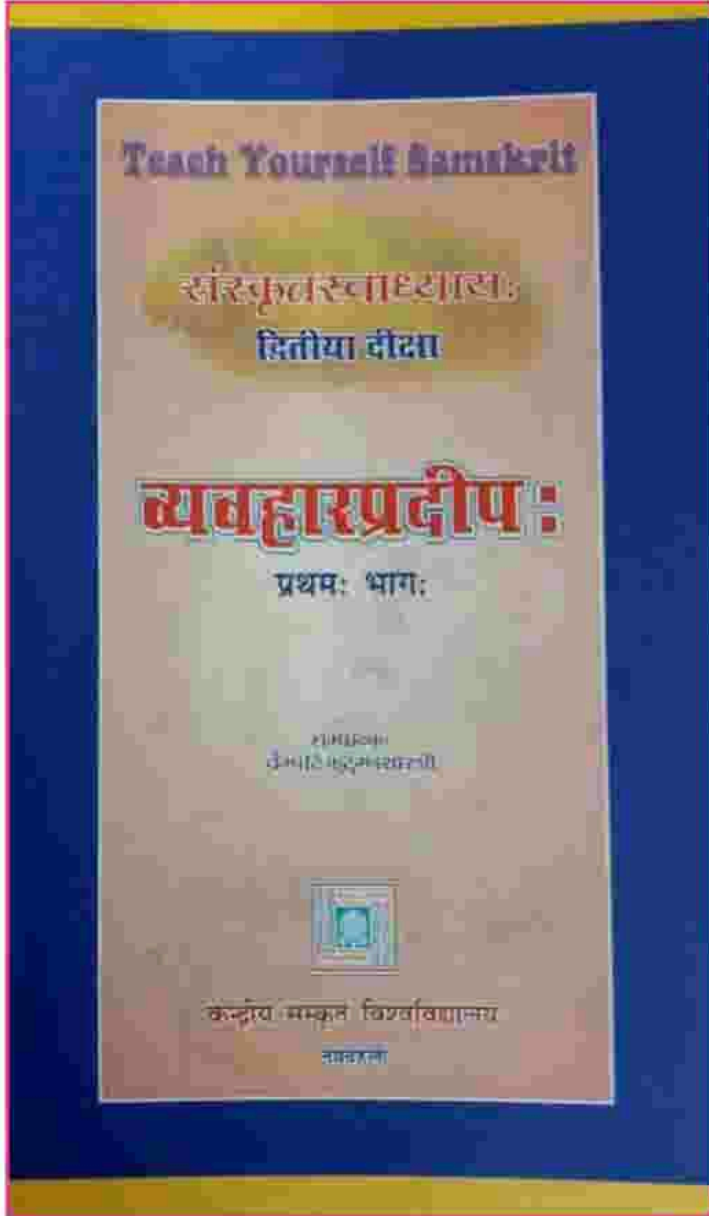
# सम्भाषणस्य पुस्तकानि



श्री दिगम्बर जैन  
प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन प्राचार्य संस्कृत महाविद्यालय  
जैन नरसिंही रोड, साँगाँनेर, जयपुर-29 (राज.)

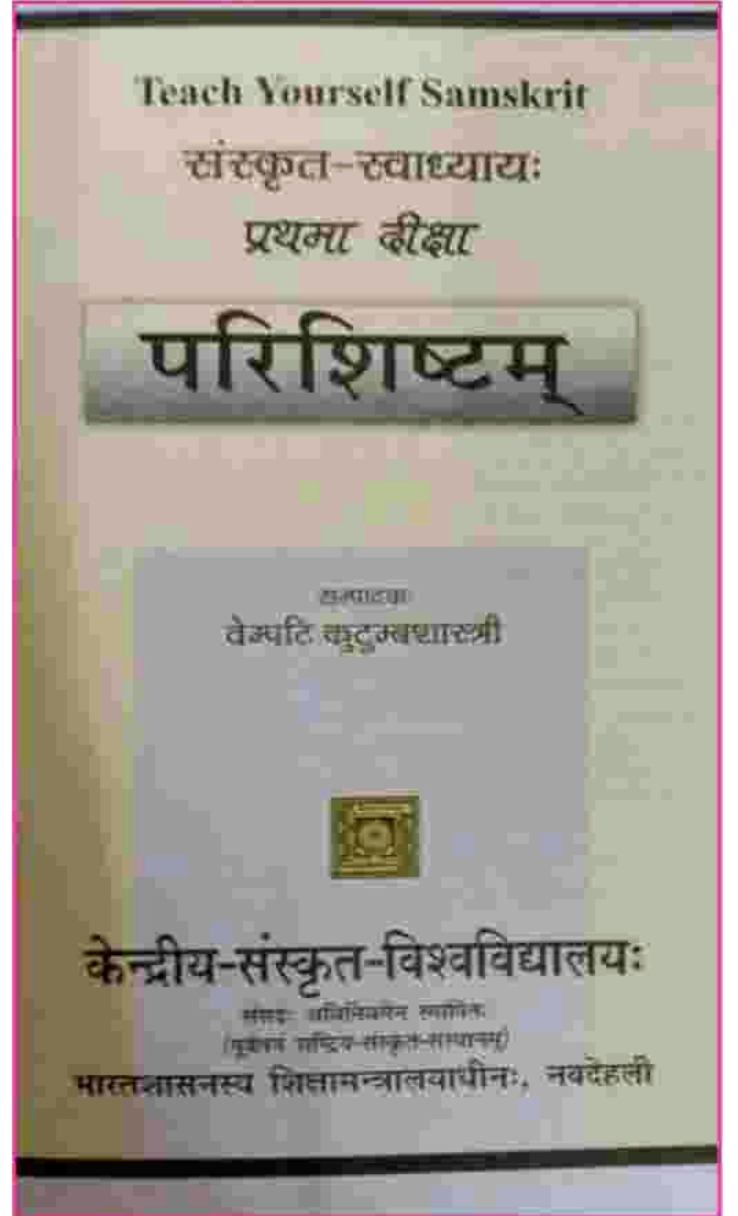
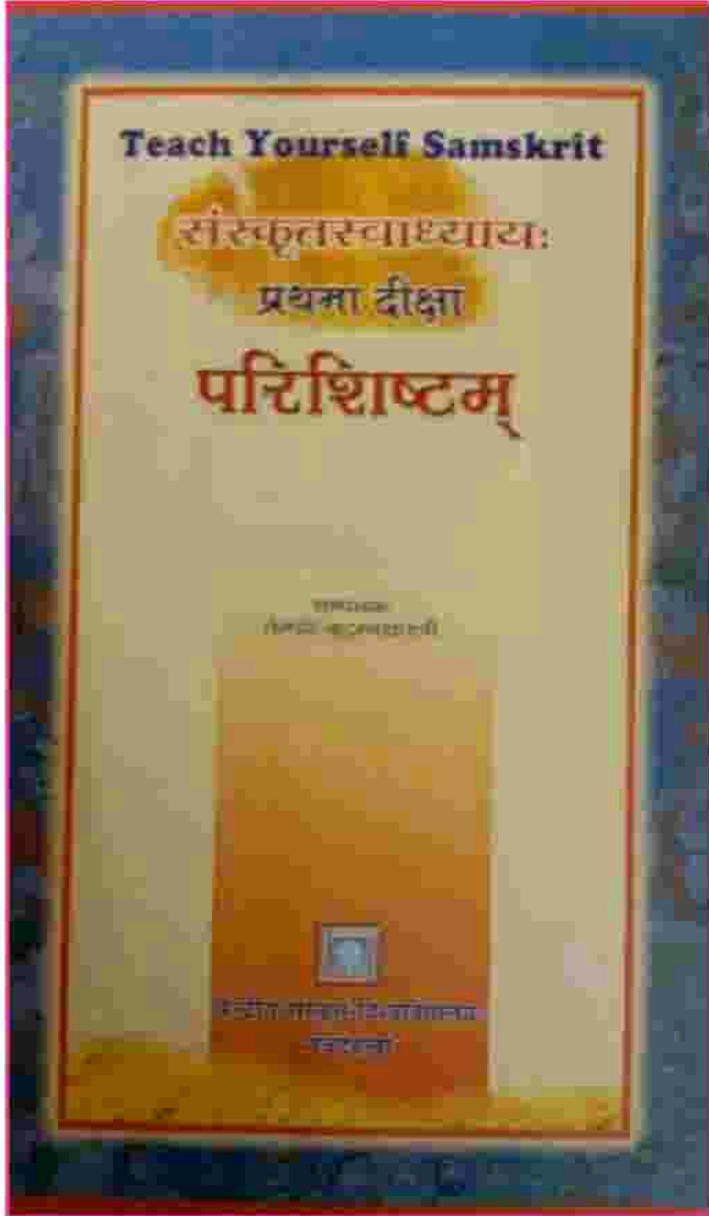
# सम्भाषणस्य पुस्तकानि



श्री दिगम्बर जैन  
प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय  
जैन नरेश्वरी रोड, सौभाग्यनगर, जयपुर-29 (राज.)

# सम्भाषणस्य पुस्तकानि

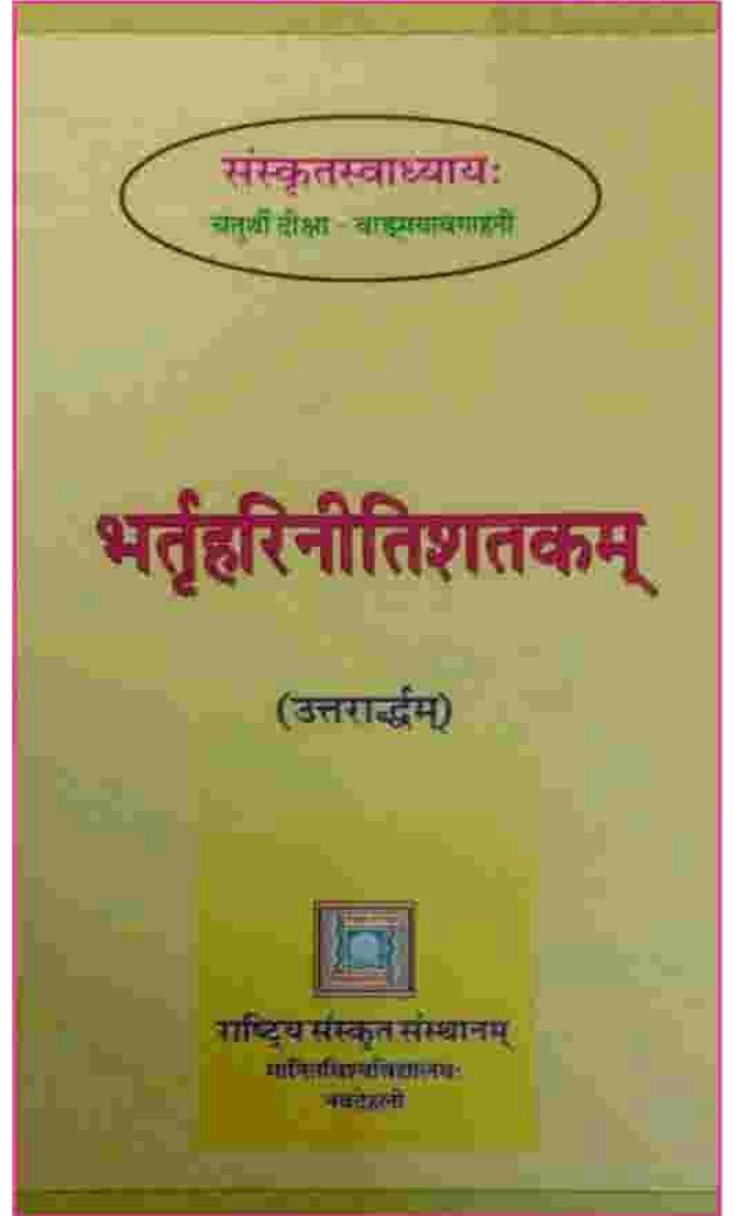
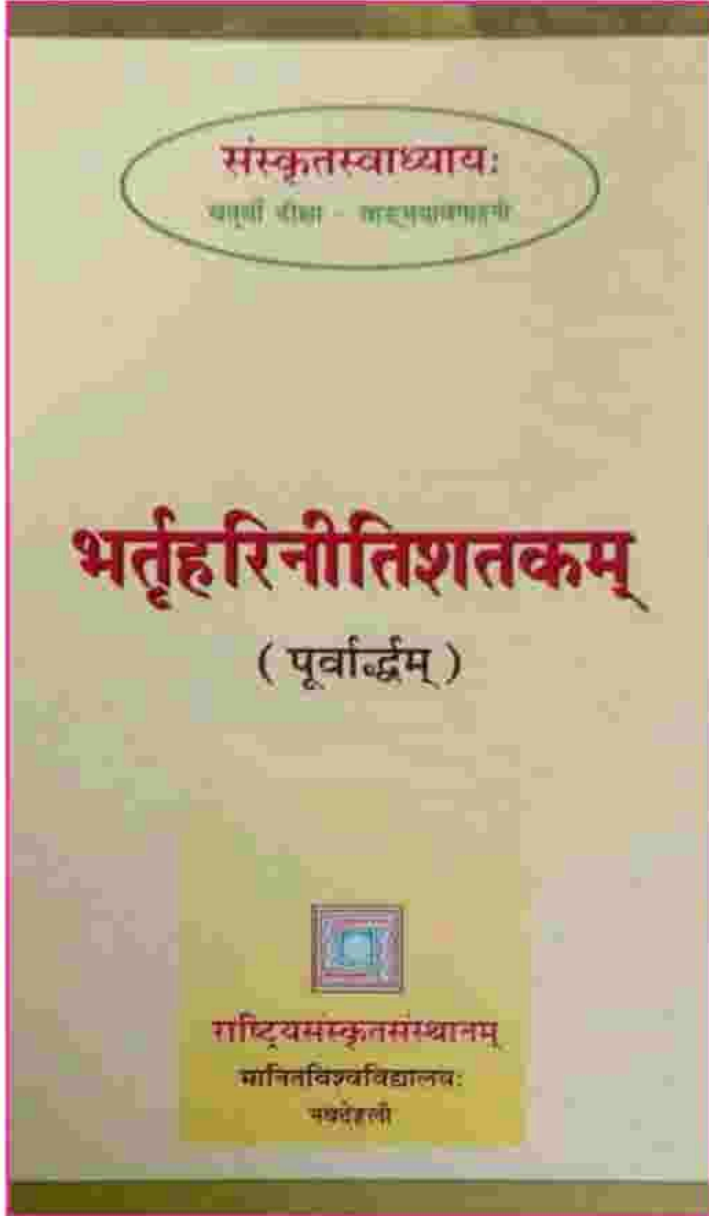


श्री दिगम्बर  
प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय  
जैन नर्सर्या रोड, साँमानेर, जयपुर-29 (राज.)



# सम्भाषणस्य पुस्तकानि



श्री दिगम्बर  
प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय  
जैन नरेश्वरी रोड, साँमानेर, जयपुर-29 (राज.)

सतां सद्भिः संगः कथमपि हि पुण्येन भवति ।  
सज्जनों का सज्जनों से सम्बन्ध किसी प्रकार बडे पुण्य से होता है।



—महाकवि भवभूति (उ.रामचरित 2/1)

ध्रुवं फलाय महते महद्भिः सह संगमः ।

महान् पुरुषों की संगति निश्चय ही महान् फल देती है



—सोमदेव (कथासरित्सागर 12/5/150)

**बुद्धिर्नाग्रेसरी यस्य न निर्बन्धः फलत्यसी ।**  
जिस प्रयत्न में बुद्धि अग्रसर नहीं होती, वह प्रयत्न कभी  
सफल नहीं होता ।

:- आदि पुराण, 46 वाँ पर्व, 61-451

विद्या धर्मावगाहश्च जायतेऽवहितात्मनाम् ॥

विद्या और धर्म की प्राप्ति स्थिर चित्तवालों को ही होती है।

- पद्मपुराण - 26/71





गुणवदाश्रयान्निर्गुणोपि गुणी भवति।

गुणी पुरुष का आश्रय लेने से, गुणहीन भी गुणी हो जाता है।

- चाणक्यसूत्राणि (176)



अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।  
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं ॥  
बड़ों का अभिवादन करने वाले मनुष्य की और नित्य वृद्धों की सेवा करने  
वाले मनुष्य की आयु, विद्या, यश और बल— ये चार चीजें बढ़ती हैं।



प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।  
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥  
प्रिय वाक्य बोलने से सभी जीव संतुष्ट हो जाते हैं, अतः प्रिय वचन ही बोलने  
चाहिए। ऐसे वचन बोलने से कंजूसी कैसी ?



जायते विफलं कर्माप्रेक्षापूर्वकारिणाम् ।

बिना विचारे कार्य करने वालों का कार्य निष्फल हो जाता है।



- पद्मपुराण- 12/165

वाण्येका समलं करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते ।

संस्कार युक्त वाणी ही व्यक्ति को सुशोभित करती है।



भर्तृहरि नीतिशतकम्-19

न विद्यते हि विद्यायामगम्यं रम्य वस्तुषु।  
विद्या के होने पर सुन्दर वस्तुओं में से ऐसी कोई भी वस्तु नहीं  
जो मिल न सके।



क्षत्रचूडामणि, सप्तम लम्ब, 55-231